साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 54, फरवरी(प्रथम) , 2019

स्मृति शेष: अफसना निगार गयास अहमद गद्दी (जन्म-17फरवरी 1928,निधन-25 जनवरी1985)

लौट आ, ओ फूल की पंखड़ी फिर.....

-जनकदेव जनक

गयास अहमद गद्दी भारत-पाक उर्दू अदब के मशहूर अफसना निगारों में से एक थे, जिनकी लिखी कहानियां रांची व मगध विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में शामिल है जिसे स्नाततकोत्तर के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं. उर्दू कथा साहित्य में उनका नाम जोगेंद्र पाल, कलाम हैदरी, कमर हसन, इंतिजार हुसैन, खालिदा असगर, गुलाम अब्बार, जिलानी बानो, सुरेंदर, राजिंदर सिंह बेदी के साथ लिया जाता है. गयास अहमद गद्दी का जन्म 17 फरवरी 1928 को हुआ था. जबकि इस जहां से 25 जनवरी 1985 को अलविदा हुए थे.

उस वक्त उन नामटीन हस्तियों में रहस्यात्मक और सांकेतिक कहानियां लिखने की होड़ मची हुी थी. कुछ कहानियों में बिंबो और प्रतीक से गुढ़तम भावों की अभिव्यक्ति की जाने लगी थी, जैसे उर्दू कहानियों की यही मंजिल हो. कहानी'दूसरे आदमी का ड्राइंग रूम',मक्खी, अलिफ लाम',मीम' आदि इसके ज्वलंत उदाहरण है.

चौथी जमात पास गयास अहमद गद्दी, फतेहपुर लेन झरिया के गद्दी बिरादरी के एक ग्वाला परिवार से ताल्ललुक रखते थे. उनके पिता का नाम अहमद गद्दी था. गयास अहमद गद्दी के बचपन में भी उनका वालदा खुदा को प्यारी हो गई. उसके बाद उनका लालन पालन उनके

चाचा हबीब गद्दी ने किया. उनके चाचा नाबल्द थे. इसलिए मात्र छह वर्ष की उम्र में ही गयास अहमद गद्दी को गोद ले लिया. उस समय गद्दी बिरादरी में इल्म-ओ-अदब की कोई अहमियत नहीं थी. फिर भी एक मदरसा में तालिम हासिल करने के लिए भेजा गया. जहां चार जमातें ही पढ़ सके. उसके बाद चाचा ने अपने पुश्तैनी पेशा मवेशियों के देख-रेख में लगा दिया. जिनका काम जंगलों में मवेशियों को चराना, और उसी दरमियान किसी ऊंचे टीले पर बैठकर पक्का ठोंगा पर अपने जेहन में आई अफसानों का मजबून लिखना था.

इस दौरान गयास अहमद गद्दी ने काफी मुसीबतें झेली. अपने कार्य के विपरीत परिस्थियों के बावजूद भी अपना लेखन कार्य नहीं छोड़ा, जब भी उनके कुंठित मन में कोई नया विचार अंकुरित होता, उसे अपने उर्वरा मानस पटल की जमीन में फसल उगाने के लिए रोप देते. धीरे धीरे सृजन का पौधा जवान हुआ. फल और फूल देने लगा. किसी शायर ने सच ही कहा है...

हजार आंधियां उठे हजार बर्क गिरे,
वे फूल खिलके रहेंगे जो खिलने वाले है.

कितनी विचित्र बात है कि गयास अहमद गद्दी बिना उच्च शिक्षा प्राप्त किये ही उर्दू कथा साहित्य में अपनी रचना संस्कार को जमीन से फलक तक पहुंचाने में सफलता पाई.

उनकी रचनाओं में काले शाह, कैदी, कई रोशनी, बाबा लोग, परिंदा पकड़नेवाली गाड़ी, सारा दिन धूप, पड़ाव आदि प्रमुख है. इन कहानियों में उन्होंने मानवीय संवेदनाओं का बखूबी वैज्ञानिक विश्लेषण किया है. आहत मनुष्य अपनी आंतरिक पीड़ा को जुबां तक ला नहीं पाता, जिसे रचनाकार ने उसके हाव भावों व मनो:स्थितियों

का आकलन कर आंतरिक पीड़ा को उजागर किया है. ऐसे फनकार की याद में शायर बशीर बद्र की ये पंक्तियां याद आती है-

'उजाले अपनी यादों के हमारे पास रहने दो,
न जाने किस गली में जिंदगी की शाम हो जाये.

गयास अहमद गद्दी 32 वर्ष पूर्व इस जहान को छोड़ चुके है. लेकिन उनका चिंतन आज भी समसामयिक लगता है. एक वाक्या है. जब गया बिहार से कलाम हैदर मिलने के लिए गयास अहमद गद्दी के फतेहपुर झरिया स्थित उनके घर पहुंचे थे, तो पता चला कि वे घर पर नहीं हैं. मवेशी चराने के लिए होरिलाडीह जंगल गये हैं. कलाम हैदर जब गयास अहमद गद्दी से मिलने जंगल पहुंचे तो देखा कि जानवर घास चर रहे थे और उंचे टीले पर बैठे वे पाकिया ठोंगा को फाड़ कर उस पर कुछ लिख रहे थे. कलाम हैदर ने उनके बारे में लिखा, 'पता नहीं ऐसी कबाइली जिंदगी गुजारने वाले गयास अहमद गद्दी के कान में कब और कहां किसी फरिश्ते ने फूंक दिया कि उठो और लिखो!'

कलाम हैदर ने ही उनकी पहली किताब 'बाबा लोग' का प्रकाशन सन 1969 में किया. उनकी दूसरी किताब 'परिंदा पकड़ने वाली गाड़ी' का प्रकाशन 1977 में हुआ. परिंदा पकड़ने वाली गाड़ी 1974 में लिखी गयी कहानी थी जिस वक्त देश में आपातकाल चल रहा था. नेता, अभिनेता, और आवाम की बोलने की आजादी छीन ली गई थी. यहां तक की प्रकृति की मासूमियत भी असुरक्षित थी. वहीं उनकी किताब 'सारा दिन धूप' में व्यक्ति के अंदर पनप रहे सांसोन्मुख प्रवृत्तियों के उथल पुथल का आत्मिक हाहाकार का बड़ा विचित्र समायोजन है. 'सारा दिन धूप' वर्ष 1985 में पाठकों के पास पहुंची थी . उसके बाद उपन्यासिका 'पड़ाव' का प्रकाशन वर्ष 1980 में हुआ.

अफसना निगारों ने गयास अहमद गद्दी की कहानी 'परिंदा पकड़ने

वाली गाड़ी को ट्रेंड सेंटर कहानी का तमगा दिया. यह कम बड़ी उपलब्धि नहीं है. यह कहानी अन्य कहानियों से अलग है. प्रकृति प्रदत्त तितलियो, मैना, कबूतरों का शोषण अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए नाजायज है, इसलिए कुत्सित विचारों का भी मंथन गयास अहमद गद्दी ने सफलता पूर्वक किया है. शहर में एक ऐसी गाड़ी आती है जो शहर के परिंदो को पकड़कर ले जाती है. जो लोग शहर के परिंदों को पकड़ने के लिए आते है वे वे गांव के चिड़ीमार नहीं होते, वे ये जानते है कि शहर से चिड़ियों को कैसे पकड़ा जाता है.

उन्हीं के शब्दों में' वह मंजिल आने वाली थी कि लोग बाग अपने कामों में मसरूफ हैं और परिंदा पकड़ने वाली गाड़ी आ गई है और परिंदा पकड़ती चली जा रही है और आदमी है कि नजर उठाकर देखता भी नहीं. हलवाई की दुकान पर भिनभिनाती मक्खियां बीमारी की आशंका लेकिन लोग लापरवाह. मक्खियों द्वारा जलेबी का रस चूसना. फिर उसी रस में गिर कर मर जाना. बिनिये का जलेबी का वजन बढ़ाना....,आम के आम गुठली के दाम. यह क्रम चलता ही रहता है. और घंटी बंधी गाड़ी आ जाती है जिसे परिंदा पकड़ने वाली गाड़ी कहते हैं. कहानी प्रसंगवश आगे बढ़ती है और एक लड़का प्रश्न पूछता है कि अच्छा भाई जान, क्या ये बाजी के लक्का कबूतर को भी पकड़कर ले जायेंगे?'

बहरहाल, गयास अहमद गद्दी ने लक्का कबूतर लाकर कहानी में जान फूंक दी है . लकवाग्रस्त इंसान के लिए लक्का कबूतर उपयोगी है. लेकिन ऐसे में क्या किया जा सकता है जब लोगों का नजरिया और चिंतन ही बीमार हो. गयास अहमद गद्दी द्वारा माचिस के डिब्बे में बंद अधमरी तितली को दिखाना मुन्नी बाई के कोठे पर तोता को चंद सिक्कों में बेच देना. शहर की तमाम तितलियों को पकड़कर परिंदा

पकड़ने वालों द्वारा ले जाने की आशंका व्यक्त करना और इसकी परिणति के रूप में इमारत के दरवाजे पर पत्थर का परिंदा दिखाना गयास अहमद गद्दी का जिंदा दिली का परिचय है.

हिंदुस्तान के सरहद पार पाकिस्तान के अफसना निगार इंजजार हुसैन ने जब परिंदा पकड़ने वाली गाड़ी को पढ़ा तो उनसे संवाद किया, उसके बाद से वे गयास अहमद गद्दी का मुरीद हो गये.

'बाबा लोग' इनकी पहली कहानी संग्रह है. जिसमें नौ कहानियां है. इस कहानी संग्रह ने गयास अहमद गद्दी को उर्दू साहित्य में प्रसिद्धि दिलायी. 'पहिया' कहानी स्त्री-पुरूष संवंधों पर है. दोनों जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं. एक पहिया पंक्चर हो गया तो दूसरा कब तक घसीटेगा. इस कहानी में औरत मर्दमार है. उसे मर्द बदलने में महारथ हासिल है. यह रचना अन्य कहानियों में अलग दृष्टिकोण रखती है. 'सारा दिन सारा धूप' की कहानियां इस बात का प्रमाण है कि रचनाकार ने पाथकों के मिजाज और समाज के उतार चढ़ाव तथा मशीनी जीवन की नई नई समस्याओं को बड़ी बारिकी से समझा और उसे प्रस्तुत किया है.

साहित्यकार वकार कादिरी कहते है कि गयास अहमद गद्दी ने उर्दू साहित्य मे जब अपनी आंखें खोली उस वक्त प्रगति लेखक संघ का युग था. फिर आधुनिकता का युग आया. जिसमें ऐसी कहानियां लिखी जाने लगी जिसमें कोई कहानी का प्लॉट नहीं था. तकनीकी दृष्टकोण से आधुनिक कहानियां पुरानी कहानियों से अलग थी. कुछ लोग तो अब भी लिख रहे हैं. कुछ लेखकों की तो प्रतीकात्मक कहानियां भी आयीं, उन कहानियों में अंत:करण को छोड़कर बाह्यकरण पर ज्यादा ध्यान दिया गया है.

'अंधे परिंदे का सफर',' डूब जाने वाला सूरज', 'काले साहेब' आदि

कहानियां पाठकों के लिए थोड़ी असहज है. बोझिल प्रतीक व कठिन शब्दों की भरमार है. हालांकि रचनाकार इंसानी कमजोरियों और जीवन के कड़वे सच को बेनकाब करता है.

'नीमजॉ' कहानी में हिरणी इंसान नुमा नाग से रहम की भीख मांगती है बावजूद उसे डंस लेता है. बलात्कार करने के बाद जब रवि नामर्द हो जाता है तब उसकी मानवता जागृत होती है.

'उफई' कहानी में एक बदचलन स्त्री का चरित्र है. मगर उस स्त्री में मरियम जैसी पवित्रता भी है. जिन्सी हवस का भूखा भाई जब अपनी बड़ी बहन जोहरा के साथ बलात्कार करता है.तब जोश में होश खो देता है. कुछ दिनों बाद उसे लगता है कि उसने पाप किया है. अपने किये गये पाप को धोने के उद्देश्य से किसी गाड़ी के नीचे कूद कर जान दे देता है. रेप पर उन्होंने कई कहानियां लिखी हैं.

'बाबे' कहानी में नायक बाबे व उसका पुत्र एक ही सकीला पर फिदा है. इस कहानी में बाबे का चरित्र बहुत ही उलझा हुआ है.

'दीमक' कहानी अंधविश्वास की अनूठी कहानी है. कहानी पढ़ने से ऐसा लगता है कि पूरे समाज को शक व अंधविश्वास का दीमक लग गया है. अंगूठी खोने पर पति-पत्नी एक दूसरे को शक की निगाहों से देखते हैं. लेकिन अंगूठी मिलने के बाद समस्या का हल निकलता है.

कहानी 'पागल खाना', 'नारद मुनी', 'सितम की खुदाई', 'तुलू', 'धूप', 'तज दो तज दो', 'खाने तह खाने' कथा शिल्प की नमूना कहानियां है. जिसमें हिंदी-उर्दू के मशहूर साहित्यकारों में उंच्चा मुकाम हासिल किया है. नारद मुनी और पागल खाना में दार्शनिक गहराई ही नहीं, बल्कि व्यंग्यात्मक शैली भी है. जबकि कहानी बाबे में व्यंग्यात्मक शैली का अभाव है. वकार कादिरी कहते है कि गयास अहमद गद्दी ने उर्दू साहित्य को तीन कहानी संग्रह दिया. जो धरोहर है. इस कृति के लिए

दुनिया उन्हें सदा याद रखेगी.

वरीय पत्रकार बनखंडी मिश्रा बतलाते है कि गयास अहमद गद्दी ने 1947 के बाद से लिखना शुरू किया. अपनी रचनात्मक ऊर्जा से उन्होंने उर्दू साहित्य में उच्चा मुकाम हासिल किया. बताते हैं कि हम दोनों अक्सर बाटा मोड़ स्थित एक होटल में बैठते थे. जहां ईमाममुद्दीन खामोश, जलाल सिद्दीकी आदि उनके अफसानों पर चर्चा करते थे. कभी कभी झरिया से बाहर घूमने भी जाते थे. मशहूर कथा शिल्पी फणीश्वर नाथ रेणु, कमलेश्वर और धूमिल आदि से मिलने का अवसर मिला था. आधुनिकता व नई कहानी पर चर्चा होती थी. एकवक्त नरेश कुमार शाह ने कृशनचंद्र से पूछा था कि उर्दू कथाकारों की नई पीढ़ी में कौन कौन कहानीकार महत्वपूर्ण है तो उन्होंने गयास अहमद गद्दी, अशफाक हुसैन, इंतजार हुसैन आदि का नाम लिया था.

शायर रौनक शहरी ने अपने शोध ग्रंथ में लिखा है कि गयास अहमद गद्दी 'गद्दी' कबिले से आते है. इनके पूर्वज हिंदू (खत्री) थे. औरंगजेब के शासनकाल में उनके वंशज धर्म परिवर्तन कर इस्लाम कबूल किया. मवेशी भेड़ पालन उनका पुश्तैनी धंधा था. मवेशी पालन आज भी उनकी जीविका का साधन है. उनकेपूर्वज शिव और काली की पूजा करते थे. यह जानकारी इसलिए अदभुत है कि पाकिस्तान के नजीर सिद्दीकी ने लिखा है कि 1946 तक गयास अहमद गद्दी साहित्यकार नहीं थे. उसके बाद लिखना शुरू किया.

उनकी जिन्सी कहानियों में अफई, मंजिल -मंजिल और पहिया है. साहित्य अकादमी अवार्ड प्राप्त उनके भाई इलियास अमहद गद्दी ने ' साये-हम साये' और 'खाने-तहखाने' कहानी के बारे में लिखा है कि औरत-मर्द के संबंधों का सच्चा व खरा दास्तान उर्दू उदब के किस्सों में कहीं देखने को नहीं मिलता. परिंदा पकड़ने वाली गाड़ी, डूबने

वाला सूरज, तज दो तज दो, नारद मुनी, साये हम साये उनकी बेहतरीन कहानियों में है.

पाकिस्तान के अफसना निगार अबुल फजल सिद्दीकी ने लिखा है कि झरिया में गयास अहमद गद्दी और इलियास अहमद गद्दी दो ऐसे भाई है जो कागज पर मोती उगा रहे है.

वहीं निंदा फाजिली ने झरिया के एक मुशायरे में मंच पर खडा होकर कहा था कि हम तो झरिया शहर को गद्दी बिरादरी के दो बंधुओं के नाम से जानते हैं. उनका प्यार और स्नेह हमेशा झरिया खींच लाता है.

आखिर में अफसना निगार गयास अहमद गद्दी की यीद में शमशेर बहादुर सिंह की चंद पंक्तियां-

लौट आ ओ धार
टूट मत ओ साँझ के पत्थर
हृदय पर
(मैं समय की एक लंबी आह
मौन लंबी आह)
लौट आ, ओ फूल की पंखड़ी
फिर
फूल में लग जा
चूमता है धूल का फूल
कोई, हाय।

°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें